आभार

यह शोध-प्रबन्ध सभी के आशीर्वाद से प्रस्तुत कर रहा हूँ। इस प्रसंग पर मैं अपनी माता, हमारी बोली में कहूँ तो 'माई' श्रीमती कलावती देवी और पिता श्री राजपति के चरणों में अपनी श्रद्धाभक्ति निवेदित करते हुए उनके आशीर्वाद की कामना करता हूँ। इस महायज्ञ को पूरा करने के लिए मेरे परिवारजनों में मेरे बड़े भैया जय प्रकाश एवं छोटे भाई सुनील कुमार, अजीत कुमार, आलोक यादव तथा बहन ऊषा देवी, महक यादव एवं जीजा संजय कुमार के प्यार एवं सहयोग ने मेरा हौसला बढ़ाती रही। इसी के साथ मेरे अग्रबन्धु डॉ. ईश्वर अहिर सर ने मेरा हौंसला बढ़ाते हुए कदम-कदम पर साथ दिया। तत्पश्चात् मेरे शोधनिर्देशक प्रो. दीपेन्द्रसिंह जाडेजा सर को धन्यवाद ज्ञापित करना चाहूँगा, जिन्होंने शिष्य-रूप में स्वीकृत देकर उपकृत किया है। विभागाद्यक्ष प्रो. कल्पना गवली को मैं कैसे विस्मृत कर सकता हूँ, जिन्होंने कदम-कदम पर मेरी सहायता की है। इसी के साथ प्रो. ओ. पी. यादव सर ने भी कदम-कदम पर सहायता की एवं उत्साह-वर्धन किया है, अतः उनके प्रति अपनी कृतज्ञता ज्ञापित करना मेरा परम कर्तव्य है। विभाग के अन्य प्राध्यापकों में पूर्व विभागाध्यक्ष प्रो. दक्षा मिस्त्री, प्रो. शन्नो पाण्डेय, प्रो. कनुभाई निनामा, डॉ. एन. एस. परमार, डॉ. अज़हर ढेरीवाला आदि का मैं हृदय पूर्वक अभार मानता हूँ। इन गुरूजनों ने मेरा मार्गदर्शन किया है और मैं उनके मार्गदर्शन से लाभान्वित हुआ हूँ।

इस अवसर पर मैं उन सभी का धन्यवाद ज्ञापित करता हूँ। जिनके सहयोग से यह शोध कार्य सम्पन्न हुआ, जिसमें शोधार्थी मित्र नागेन्द्र कुमार

शर्मा एवं संगम वर्मा का बहुमूल्य योगदान रहा। इसके अतिरिक्त लखनऊ के ओजस्वी लेखक, समीक्षक बन्धु कुशावर्ती साहब के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ। उनका पुत्रवत् प्रेम मुझे सम्पन्न हुआ है। समकालीन कथा-साहित्य के प्रचंड पक्षधर है, उनके स्नेह और वात्सल्य से इस मुकाम तक मैं पहुँच पाया हूँ। इस अवसर पर उनके ऋण से उऋण कैसे हो सकता हूँ। उनके कई आलोचनात्मक एवं रचनात्मक ग्रन्थों से मैंने काफी सहायता ली है। महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग के सेवानिवृत डॉ. इन्दु शुक्ला और स्वर्गीय डॉ. दयाशंकर शुक्ल का मैं तहे दिल से आभार मानता हूँ। जिनके मार्गदर्शन में मेरा शोध-कार्य सम्पन्न हुआ।

प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध के लिए मैने अनेकानेक विद्वानों के ग्रन्थों का सहारा लिया है, उन सबके प्रति श्रद्धा-भक्ति व्यक्त करना मेरा सारस्वत धर्म है। अन्ततः कला संकाय के पूर्व प्राचार्य प्रोफ़ेसर के. क्रिष्नन साहब एवं वर्तमान प्राचार्य प्रो. (श्रीमती) आद्या बी. सक्सेना का मैं हृदय पूर्वक आभार मानता हूँ क्योंकि; उनके आशीर्वाद और तकनीकी मार्गदर्शन के अभाव में यह गुरूतर कार्य संभव न होता।

अंततः मैं उन सभी व्यक्तियों के प्रति असीम आभार प्रकट करता हूँ, जिन्होंने प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से सहायता, प्रेरणा एवं संबल प्रदान किया। जिनके आशीर्वाद एवं शुभेच्छाओ के कारण ही आज इस शोध यात्रा को उसके अंतिम पड़ाव तक पहुँचा सका हूँ।

विजय प्रकाश यादव